न्यू हॉराइज़न स्कूल

सहायक सामग्री

कक्षा नौवीं

विषय : हिंदी

सत्र 2018-2019

सामायिक परीक्षा-1,2,3 व वार्षिक

पाठ-दु:ख का अधिकार

विधा-कहानी

लेखक : यशपाल

पोशाक मनुष्य को अलग-अलग श्रेणियों में बाँट देती है। पोशाक समाज में मनुष्य का अधिकार और दर्जा निश्चित करती है। कभी मनुष्य समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझना चाहता है परन्तु वह पोशाक वहाँ पर बँधन बन जाती है।

बाजार के फुटपाथ पर एक महिला खरबूजे बेच रही थी परन्तु उसके पास खरीदने वाला कोई ग्राहक नहीं था। वह अपने घुटनों में सिर झुकाए-फफक-फफक कर रो रही थी। आसपास दुकानों पर खड़े लोग घृणा की दृष्टि से उसकी ओर देख रहे थे। लेखक भी उस महिला की व्यथा को जानना चाहता था परन्तु वहाँ उसकी पोशाक आड़े आ गई। एक आदमो कह रहा था कि इसके पुत्र को मरे पूरा दिन भी नहीं बीता और यह बेशर्म दुकान लगाकर बैठ गई। एक सज्जन कहते थे व्यक्ति जैसी नीयत रखता है वैसी ही बरकत होती है। एक सज्जन कह रहे थे कि ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाइ, धर्म-ईमान सब रोटी ही है। परचून की दुकान पर बैठे लाला जी कह रहे थे कि इसको अपने नहीं तो दूसरों के ईमान का तो ख्याल

रखना चाहिए। बाजार में हजार आदमी आते हैं कोई क्या जानता है कि इसके घर में सूतक है। कोई इसके खरबूजे खा ले तो उसका ईमान कैसे बचेगा।

लेखक को पास-पड़ोस की दुकान पर पूछने से पता चला कि उसका तेइस बईस का लड़का साँप के डसने से मर गया है। लड़का शहर के पास ही डेढ़ बीघा जमीन में सब्जी तरकारी बोकर अपने परिवार का निर्वाह करता था। कल वह खरबूजे तोड़ने गया तो खरबूजों की बेल के नीचे ठंडक में बैपे साँप पर उसका पैर पड़ गया। साँप ने उसको डस लिया। लड़के की माँ ओझा को बुला लाई, ओझा ने दान दक्षिणा लेकर नागदेव की पूजा की। घर में जो कुछ आटा दाल था वह उसको दे दिया। परन्तु उसका लड़का भगवाना नहीं बच पाया।

जिंदा आदमी नंगा रह सकता है। परन्तु मुर्दे को कैसे नंगा रखा जाए इसलिए बजाज की दुकान से कपड़ा लाना ही होगा चाहे उसके लिए कुछ भी बिक जाए। भगवाना तो चला गया जो कुछ भी घर में था वह उसके विदा करने में लग गया। बुढ़िया भगवाना द्वारा तोड़े गए खरबूजों को लेकर बाजार में आ गई। परन्तु वह फफक-फफक कर रोए ही जा रही थी। देखो कितनी बड़ी विडम्बना थी कि जिसका जवान बेटा मर गया हो उसे उसी दिन बाजार में आना पड़ रहा था।

लेखक उस बुढ़िया वियोगिनी के दुःख का अंदाजा लगाने के लिए पिछले साल अपने पड़ोस में पुत्र की मृत्यु से दुःखी माँ के बारे में सोचने लगा। वह उच्च कुलीन महिला ढ़ाई महीने तक पलंग से न उतरी थी। वह पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बाद

मूर्छित हो जाती थी। दो-दो डॉक्टर हर समय उसके पास बैठे रहते थे। पूरा शहर उसके पुत्र के शोक से द्रवित था। उस बुढ़िया को देखकर लेखक के कदम तेज हो जाते हैं। वह अपने मन में सोचता है कि शोक करने, गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और दु:खी होने का भी एक अधिकार होता है।

पाठ-धूल

विधा-निबंध

लेखक : रामविलास शर्मा

(केवल पढ़ने के लिए)

''जिनके कारण धूल भरे हीरे कहलाए'' गुप्त जी ने अपनी इस पंक्ति में जिस आँखों के तारे का जिक्र किया है उसकी चमक के आगे हीरे की चमक फीकी है। उसका धूल धूसरित गात ही अच्छा लगता है। जिसका बचपन गाँव की धूलि में खेलकर बीता हो वह धूल के बिना किसी-शिशु की कल्पना नहीं कर सकता। उच्च वर्ग ने शृंगार के अनेक साधन बनाए परन्तु जो शृंगार धूल से होता है उसके आगे सभी शृंगार फीके पड़ जाते हैं।

हम इस धूलि से बचना चाहते हैं तभी तो हम आकाश में घर बनाना चाहते हैं। इसलिए बच्चों को धूल में खेलने से मना करते हैं कि कहीं उनका नकली ृंगार फीका न पड़ जाए। धूल को शरीर से लग जाने को वे मैल कहते हैं, मैल कहकर अपनी भावना व्यक्त करने वालों को धूल भला क्यों भाएगी। अखाड़े की मिट्टी से सना शरीर देखकर तो उनको उबकाई ही आने लगेगी। अखाड़े की मिट्टी कोई साधारण मिट्टी नहीं होती उसमें तेल और मट्ठा मिलाया जाता है। मिट्टी में पहलवान चित्त होकर भी गर्व महसूस करता है क्योंकि उसका शरी भी तो इसी मिट्टी का बना हुआ है।

गाँव के लोग हमेशा धूल शब्द का ही प्रयोग करते हैं। संध्या समय जब गोपालक पशुओं को लेकर घर आते हैं, उनके पैरों से उठी धूल जो सौंदर्य उपस्थित करती है वह कवियों की कल्पना से भी परे की बात है। गोधूलि पर कवियों ने बहुत कुछ लिखा। शहर में धूल-धक्कड़ तो बहुत होता है परन्तु गोधूलि के वहाँ दर्शन नहीं होते। कवियों ने जिस गोधूलि को अपने साहित्य का अंग बनाया वह धूलि गाय चराने वालों के पैरों से, उठी हुई धूल ही है।

नीच व्यक्ति को धूल के समान वेदों में नहीं कहा जा सकता। सती-स्त्री इसे अपने माथे में लगाती है, योद्धा इसके अपनी आँखों से लगाता है। धूल को जितना आदर दिया जाता है उतना किसी और वस्तु का नहीं। श्रद्धा-भक्ति, स्नेह इस धूल से ही प्रदर्शित होते हैं।

हमारी देश भक्ति इस धूल का अपमान न करे, किसान के शरीर पर छाई धूल हमारी सभ्यता से कहती है कि हम काँच से प्यार करते हैं, धूल भरे हीरे को नहीं देखते। वे स्वयं एक दिन अपनी अमरता का प्रमाण दे देंगे। अभो तो उन्होंने अपने अटूट होने का प्रमाण दिया है। जब वे पलटकर वार करेंगे तो काँच और हीरे के भेद का ज्ञान हो जाएगा। तब हमें धूल का महत्त्व नज़र आएगा। हम उसको माथे से लगाना सीख जाएँगे।

पाठ - एवरेस्टः मेरी शिखा यात्रा

विधा-आत्मकथा

लेखिका : बचेंद्री पाल

जिस अभियान दल की बचेंद्री पाल सदस्या थी वह 7 मार्च को दिल्ली से काठमांडू के लिए रवाना हुआ। अग्रिम दल पहले ही जा चुका था। नमचे बाज़ार के आस-पास के गाँवों में अधिकतर शेरपा रहते हैं। नमचे बाज़ार से एवरेस्ट का शिखर स्पष्ट दिख रहा था। नेपाली लोग एवरेस्ट को 'सागर माथा' कहते हैं। एवरेस्ट शिखर पर बर्फ का एक बड़ा पूल ध्वज की तरह लहरा रहा था। इस तरह का पूल 150 कि.मी. या उससे ज्यादा गति से हवाओं के चलने से बनता है। शिखर पर जाने के लिए दक्षिण पूर्व पहाड़ी पर इस प्रकार के तूफानों को झेलना ही पड़ता है। 26 मार्च को हिम स्खलन के कारण एक शेरपा की मृत्यु हो गई थी। यह जानकर बहुत दुख हुआ। ऐसे अभियानों पर ऐसी घटनाएँ होती ही रहती हैं। इनके अभियान दल के नेता कर्नल खुल्लर एवं उपनेता 'प्रेमचन्द' थे। 26 मार्च को हम पैरिच लौट आए। हमारे उपनेता 'प्रेमचन्द' ने हमें जानकारी दी कि 6000 मी. पर जो कैम्प है वहाँ तक का रास्ता साफ कर दिया है। रास्ते में आने वाली सभी कठिनाइयों का जायजा ले लिया गया है। उन्होंन हमें ग्लेशियर के कारण हो सकने

वाले जोखिर के बारे में भी अवगत कराया। बेस कैम्प पहुँचकर हमें एक अन्य मृत्यु की खबर मिली। एवरेस्ट शिखर को अब तक मैंने दूर से ही देखा था।

हिमपात अपने आप में एक तरह से बर्फ के खंडों को अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही था। ग्लोशियर के बहने से बर्फ में हलचल हो जाती थी, जिसके कारण बड़ी-बड़ी चट्टानें गिर जाती हैं। इससे बहुत खतरनाक स्थिति पैदा हो जाती है। दूसरे दिन नए आने वाले सामान को हिमपात के आधे रास्ते तक ले आए थे। डॉ. मीन मेहता ने हमें कई उपस्करों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। तीसरा दिन हिमपात के कैम्प तक सामना ढोकर चढ़ाई करने के लिए निश्चित था। हमारे पास वॉकी टॉकी थी जिससे हम पल-पल की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कैंप पर पहुँचने वाली दो महिलाएँ थी। कर्नल खुल्लर यह जानकर खुश हुए। बेस कैंप में तेनजिंग अपनी पुत्री डेकी के साथ मिलने आए थे। उन्होंने हमें बहुत जानकारी दी थी। उन्होंने बचेंद्री से कहा था कि तुम हपने ही प्रयास में शिखर पर पहुँच जाओगी। 15-16 मई की रात को 12:30 पर एक घटना घटी। एक बहुत भारी हिमखण्ड बहुत तेज गति से कैंप के ऊपर आ गिरा उसमें कई लोग घायल हो गए। कई ही हड्डियाँ टूट गईं। बचेंद्री को बर्फ के नीचे से निकाला गया परन्तु वह सही-सलामत थी।

पाठ-रैदास के पद

विधा-पद/कविता

कवि रैदास (रविदास)

भक्त कवि रैदास कहते हैं कि अब तो मुझ ईश्वर के नाम की रट लग गई है अब भला वह कैसे छूट सकती है। वे कहते हैं, हे प्रभु जी! आप हमारे प्रत्येक अंग में बसे हुए हो। हे ईश्वर! तुम आकाश में उमड़ते हुए बादलत हो और हम वन के मोर हैं। जिस प्रकार चकोर पक्षी चन्द्रमा की ओर टकटकी लगाकर देखता रहता है, उसी प्रकार हम भी आप की ओर देखते रहते हैं। हे परमात्मा! तुम दीपक हो और हम उसमें जलने वाली बत्ती हैं, जिसकी ज्योति रात-दिन प्रकाशमान रहती है। हे प्रभु! तुम्हारे अतिरिक्त अपने यश की लाज और कौन रख सकता है। हे निर्धनों के रक्षक! पालनहार प्रभु मेरे सिर पर अपनी कृपा की छत्रछाया रखो। रैदास अछूत है उसके स्पर्श में दोष है जिसे भी छू लेता है वह अपवित्र हो जाता है। अतः हे प्रभु! मुझ अपवित्र पर कृपा करके इस अपावन को पावन बना दो। भावाविभूत होकर कवि कहते हैं कि उनके गोविन्द यश का स्मरण कराते हुए रैदास जी कहते हैं कि प्रभु के कबीरदास, नामदेव, त्रिलोचन, साधना और सैन का उद्धार किया है। अतः हे संतो! सुनो! वह अवश्य ही हमारी जीवात्मा को मोक्ष प्रदान करेंगे।

पाठ-रहीम के दोहे

विधा- दोहे/कविता

कवि- रहीमदास

पहले दोहे में रहीम ने प्रेम की महत्ता का प्रतिपादन किया है। दूसरे दोहे में अपने दु:ख को अपने तक ही सीमित रखने की बात कही है। तीसरे दोहे में एक कार्य पूर्ण होने पर ही दूसरा कार्य शुरू करने की बात कही है। चौथे दोहे में यह बताया है कि महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के कारण किसी भी स्थान का महत्त्व बढ़ जाता है। पाँचवें दोहे में कवि ने इस बात का खण्डन किया है कि लघु आकार का महत्त्व भी लघु होता है। छठे दोहे में कवि ने बताया है कि छोटी वस्तु भी महत्त्वपूर्ण है यदि वह किसी के काम आती है काम न आने पर बुड़ी वस्तु का भी कोई महत्त्व नहीं होता। सातवें दोहे में बताया है कि पशु और भी मनुष्य से अच्छा है क्योंकि वह प्रसन्न होने पर अपना सब कुछ दे देता है। आठवें दोहे में बताया है कि एक बार बात बिगड़ जाने पर पहले वाली स्थिति नहीं आती। नौवें दोहे में बताया है कि छोटी-से-छोटी वस्तु का भी अपना महत्त्व होता है। दसवें दोहे में बताया है कि अपनी सम्पत्ति के चले जाने पर कोई नहीं पूछता। अन्तिम दोहे में कवि ने पानी के महत्त्व को बताया है।

पाठ-शुक्र तारे का समान

विधा- जीवनी

लेखक-स्वामी आनंद

शुक्र तारा अपनी चमक के लिए जाना जाता है। गाँधी जी के सचिव भाई महादेव जी भी शुक्र तारे के समान थे। वे भी थोड़े समय के लिए अपनी आभा बिखेर कर अस्त हो गए। महादेव जी हँसी-मज़ाक करते समय अपना परिचय हम्माल या 'पीर-बावर्ची-मिश्ती-खर' आदि के रूप में दे देते थे। गाँधी जी उनको अपने पुत्र से भी अधिक स्नेह करते थे। वे गाँधी जी के पास 1917 में पहुँचे थे। गाँधी जी ने उनकी प्रतिभा को पहचान कर उनको अपना वारिस घोषित कर दिया था। 1919 में जलियाँवाला काण्ड के बाद गाँधी जी को पलवल में गिरफ्तार कर लिया था। इसो बीच पंजाब में फौजी शासन के दौरान लोगों पर कहर बरपाया जाने लगा। पंजाब के अधिकतर नेताओं को गिरफ्तार करके उम्र कैद अथवा काले पानी की सजाएँ दे दी गई। गाँधी जी के सामने जुल्मों और अत्याचारों की कहानियाँ पेश करने के लिए आने वाले पीड़ितों के दल क दल उमड़ते रहते थे। महादेव जी उनकी बातों की संक्षिप्त टिप्पणियाँ तैयार करके उनको गाँधी जी के सामने प्रस्तुत करते थे। गाँधी जी मुम्बई के मुख्य राष्ट्रीय दैनिक 'बाम्बे क्रानिकल' में इन सब विषयों पर लेख लिखा करते थे। 'क्रानिकल' के अंग्रेज सम्पादक हीर्नीमैन को सरकार ने देश निकाले की सजा देकर इंग्लैंड भेज दिया। उन्हीं दिनों बम्बई के

तीन नेता शंकरलाल बैंकर, उम्मर सोबानी और जमनादास द्वारकादास 'यंग इंडिया' अखबार निकालते थे। ये तीनों इस अखबार में लिखने के लिए गाँधी जी के पास आए और 'यंग इंडिया' का सम्पादक बनने को कहा। गाँधी जी तो चाहते ही थे। उन्होंने स्वीकार कर लिया।

इस पत्र के कारण गाँधी जी का काम बहुत बढ़ गया। इस अखबार को भी सप्ताह में दो दिन करना पड़ा। हर रोज़ पत्र व्यवहार और मुलाकातें, लेख, टिप्पणियाँ, पंजाब के मामलों का सार संक्षेप, यह सारी सामग्री तोन दिन में तैयार करनी होती थी इसके बाद 'नवजीवन' अखबार भी निकालना शुरू कर दिया। छह महीनों के लिए लेखक भी आश्रम में रहने के लिए पहुँचे। ये ग्राहकों का हिसाब-किताब और डाक-किताब और डाक-व्यवहार रखले लगे। छापाखाने की व्यवस्था भी लेखक के ही पास थी गाँधी जी और महादेव जी का अधिकतर समय देश भ्रमण में बीतने लगा।

महादेव जी देश-विदेश के प्रमुख समाचारपत्रों पर भी निगाह रखते थे। वे उन पर निरन्तर टीका-टिप्पणी करते रहते थे। गाँधी जी के पास आने से पहले विद्यार्थी अवस्था में महादेव ने सरकार के अनुवाद विभाग में नौकरी दी थी। नर हरि भाई इनके जिगरी दोस्त थे। वकालत में स्याह को सफेद, सफेद को स्याह करना पड़ता है। परन्तु इन दोनों का साहित्य से बहुत लगाव था। महादेव जी की जैसी लिखावट व भाषा की शुद्धता थी वे अपने में बेजोड़ थी। उनका लेखन पढ़ने वाले

पाठ-धर्म की आड़

विधा- निबंध

लेखक-गणेश शंकर विद्यार्थी

देश में जितने भी दंगे फसाद होते हैं वे सब धर्म के नाम पर ही होते हैं। इस प्रकार के दंगों के लिए ऐसे व्यक्तियों का इस्तेमाल किया जाता है जो यह जानते ही नहीं कि धर्म क्या है? कुछ नासमझ लोग स्वार्थी लोगों के बहकावे में आकर जुत जाते हैं। इस प्रकार के लोग धर्म और ईमान के लिए अपने प्राणों तक का बलिदान देने में भी नहीं हिचकते। ये अधिकतर ऐसे ही लोग होते हैं जो धर्म के बारे में बलिकुल भी नहीं जानते। वे स्वार्थी लोगों द्वारा बताई गई लकीर को ही पीटते रहते हैं।

पाश्चात्य देशों में धनी लोग गरीब लोगों का खून चूसकर उनकी कमाई के बल पर धनपति बने बैठे हैं। वे गरीबों को सदा चूसने में ही विश्वास रखते हैं। इसी कारण से वहाँ साम्यवाद बोलशेविज्म आदि का जन्म हुआ। हमारे देश में यह बात इतनी तो नहीं है जितना कि बुद्धि पर पर्दा डालकर कुछ लोगों के अन्दर धार्मिक उन्माद पैदा करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना है। यहाँ बुद्धि पर पर्दा डालकर पहले ईश्वर और आत्मा का स्थान अपने लिए सुरक्षित करना फिर ईश्वर व आत्मा की दुहाई देकर उनके कन्धों पर चढ़कर अपना नेतृत्व चमकाना।

जो मूर्ख लोग है वे धर्म के नाम पर चीखते-चिल्लाते रहते हैं वे अपने प्राणों की बाजियाँ लगाते रहते हैं। इन मूर्ख के बलबूते पर कुछ लोग धर्म के ठेकेदार बन जाते हैं। उनकी शक्ति बढ़ने का कारण ये मूर्ख और उन्मादी लोग ही हैं। धर्म ऐसा होना चाहिए जिस पर कोई नियन्त्रण न हो, मानने वाला जैसे चाहे उसको माने, जिसकी चाहे पूजा-उपासना करे। धर्म और ईमान मन का सौदा हो, वह ईश्वर और आत्मा के बीच का सम्बन्ध हो, उस पर किसी धर्म के ठेकेदार का नियन्त्रण न हो। किसी का धर्म किसी अन्य व्यक्ति को कुचलने का साधन न बने। कोई भी धर्म स्वाधीनता के मार्ग में बाधक न बने।

देश की स्वाधीनता के युद्ध में जब धर्म के ठेकेदारों को शामिल किया गया तो वह दिन देश की आज़ादी के आन्दोलन को आगे ले जाने वाला नहीं अपितु एक कदम पीछे हटाने वाला था। इसका परिणाम बाद में भारतवासियों ने देखा ही है। अब्दुलवारी और शंकराचार्य जैसे लोग ताकतवर होकर उभरे और अपने मज़हबी पागलपन से प्रपंच और उत्पात का राज्य स्थापित किया।

महात्मा जी का अपना धर्म था। वे एक कदम भी धर्म के बिना नहीं चलते थे। उनके धर्म से किसी भी व्यक्ति को किसी प्रकार की हानि नहीं होती थी।

धर्म के नाम पर जो पूजा पद्धतियाँ हैं उनका नाम धर्म नहीं है। भगवान को रिश्वत देकर आप दिन भर बेईमानी करते।

पाठ-कीचड़ का काव्य

विधा- निबंध

लेखक-काका कालेलकर

आज सुबह सारा सौन्दर्य उत्तर के आकाश में बिखरा हुआ था। दिशा एक दम लाल थी। परंतु यह सौंदर्य थोड़ी देर बाद ही छूमंतर हो गया। आकाश में बादल लाल से सफेद नजर आने लगे। लेखक और कवि सम्पूर्ण प्रकृति का वर्णन करते रहते हैं परन्तु कीचड़ का वर्णन कभी नहीं करते। लोग मानते हैं कि कीचड़ से शरीर गन्दा हो जाता है। यदि हम गहराई से सोचें तो कीचड़ में भी सौंदर्य है। कीमती कपड़ों के लिए कीचड़ जैसे रंग पसन्द करते हैं परन्तु कीचड़ का नाम आते ही लोग बिगड़ जाते हैं। नदी किनारे या तालाबों में जब कीचड़ सूख जाता है तो उसमें दरारें आ जाती हैं। नदी किनारे मीलों तक फैला हुआ कीचड़ क्या मन को नहीं भाता। कीचड़ जब थोड़ा सूख जाता है तो उस पर बगुलों के पैरों के निशान जिनमें तीन नाखून और अँगूठा पीछे ऐसे उनके पद चिह्न मध्य एशिया के रास्ते को तरह दूर-दूर तक अंकित देख इसी रास्ते अपना कारवाँ ले जाने की इच्छा होती है।

जब कीचड़ सूख जाता है और जमीन सख्त व ठोस हो जाती है तब उस पर विभिन्न पशुओं के पैरों के निशान अंकित होते हैं तो उनकी शोभा निराली होती है और जब मस्ती में चूर दो पाडे अपने सींग मिलाकर लड़ते हैं तो उनके पैरों के

निशानों को देखकर ऐसा लगता है जैसे महिषा कुल के भारतीय युद्ध का पूरा इतिहास उनके इन पैरों के निशानों से लिख दिया गया हो।

कीचड़ देखना हो तो गंगा या सिंधु नदी के किनारे जाकर देखो। यदि इससे भी मन में भरें ता सीधे खम्भात चले जाइए। वहाँ माही नदी के मुहाने से जहाँ तक भी नज़र डालोगे कीचड़ ही कीचड़ नज़र आएगा। यह कीचड़ इतना अधिक है कि हाथी की तो क्या बिसात पर्वत के पर्वत इस कीचड़ में समा सकते हैं। धान की फसल कीचड़ में ही लगाई जाती है। जब तक खेत में कीचड़ नहीं होगी फसल लगाई ही नहीं जा सकती। लोग पंक से घृणा करते हैं परन्तु पंकज का नाम आते ही कवियों का मन तो प्रसन्नता से नाच उठता है। बिना पंक के पंकज कहाँ यह तो ठीक वैसी ही बात होगी कि हम वासुदेव की तो पूजा करें परन्तु वसुदेव को पूजें नहीं। हीरे का भारी मूल्य दें दें परन्तु उस कोयले का नहीं जहाँ से हीरा निकला है। मोती को तो गले में बाँधते हैं परन्तु मातुश्री को नहीं बाँधते। कम से कम इस विषय पर कवियों से चर्चा करना व्यर्थ है।

पाठ-वैज्ञानिक चेतना के वाहक

विधा-लेख

लेखक-धीरंजन कुमार मालवे (केवल पढ़ने के लिए)

प्रस्तुत पाठ 'वैज्ञानिक चेतना के वाहक चंद्रशेखर वेंकट रामन्' ने नोबेल पुरस्कार विजेता प्रथम भारतीय वैज्ञानिक के संघर्षमय जीवन का प्रेरणादायक चित्रण किया गया है। वेंकट राम्न ने कुछ ग्यारह वर्ष की आयु में मैट्रिक की परीक्षा तथा विशेष योग्यता के साथ इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की थी। भौतिकी और अंग्रेजी में स्वर्ण पदक के साथ बी.ए. औ एम. ए. करने के बाद केवल अट्ठारह वर्ष की आयु में ही कोलकाता में भारत सरकार के वित्त विभाग में सहायक जनरल एकाउटेंट नियुक्त कर लिय गय थे। उनकी इस प्रतिभा से उनके अध्यापक अभिभूत थे।

सन् 1930 में जब रामन् को नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया तो उन्होंने पुरस्कार समारोह के बारे में अपने एक मित्र को पत्र लिखा था कि जैसे ही में पुरस्कार लेकर मुड़ा और देखा कि जिस स्थान पर मुझे बैठाया गया था, उसके ठी ऊपर यूनियन जैक लहरा रहा था। इसे देखकर मेरे हृदय को दु:ख हुआ कि हमारे देश का राष्ट्रीय ध्वज तक नहीं है। इस अहसास से मेरा गला भर आया और में फूट-फूट कर रो पड़ा।

चंद्रशेखर वेंकट रामन् भारत में विज्ञान को उन्नति के शिखर पर ले जाने की आकांक्षा रखते थे। वे भारत की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। महात्मा गाँधी को वे अपना अभिन्न मित्र समझते थे। नोबेल पुरस्कार समारोह के बाद एक भोज समारोह के दौरान उन्होंने कहा था कि मुझे एक बधाई का तार अपने सबसे प्रिय मित्र गाँधी जी से मिला है, जो इस समय जेल में हैं।

प्रस्तुत पाठ के मेधावी छात्र से महान वैज्ञानिक तक की रामन् की संघर्षमय जीवन यात्रा और उनकी उपलब्धियों की जानकारी बखूबी प्रदान करता है।

पाठ-तुम कब जाओगे, अतिथि

विधा-व्यंग्य

लेखक-शरद जोशी

लेखक के घर एक बार अतिथि आए। वे आकर ऐसे जमे कि जाने का नाम ही नहीं लेते थे। लेखक उनके सामने रोज कैलेंडर की तारीख बदलता था जिससे कि वह समझ जाए कि इसे आए कितने दिन हो गए हैं। अंतरिक्ष यात्री लाखों मील की यात्रा करने के बाद भी इतनी देर चाँद पर नहीं रुके जितना समय थोड़ी दूर से आए इस अतिथि को रुके हो गया है। इसके कारण लेखक की आर्थिक हालत भी जवाब देने लगी है। उनके बटुए का वजन भी कम होने लगा है। लेखक ने उसकी आवभगत तहेदिल से की थी। उस अतिथि के लिए निडर भी अपनी हैसियत से बढ़कर बनाया था। बस यही आशा थी कि ये महाशय अगले दिन चले जाएँगे परन्तु ऐसा नहीं हुआ। हम जितना सत्कार कर सकते थे कर लिया। अब हमारी सारी सीमाएँ समाप्त हो चुकी हैं। तीसरे दिन अतिथि महोदय ने लेखक से कहा कि में कपड़े धोबी के यहाँ देना चाहता हूँ। इस बात की तो बिल्कुल भी आशा नहीं थी। लेखक ने सोचा धोबी कई दिन बाद कपड़े देगा तब तक ये यहीं डटे रहेंगे। इनके कपड़े क्यों न किसी लॉण्ड्री में दे दें।

लेखक जब उनके कपड़े लॉण्ड्री में देने जा रहा था तो उनकी पत्नी ने पूछ लिया कि कहाँ जा रहे हो। उत्तर सुनकर पत्नी की त्यौरियाँ चढ गईं। इसका मतलब

अतिथि महोदय आज भी नहीं जाएँगे। धीरे-धीरे मेजबान और अतिथि के बीच औपचारिकताएँ कम होने लगीं। ठहाके बंद हो गए। लेखक एक और बैठे अखबार पढ़ रहे थे। तो अतिथि महोदय पत्रिका के पन्ने पलट रहे थे। बार-बार यही प्रश्न उठ रहा था कि हे अतिथि तुम कब जाओगे। बात शानदार भोजन से खिचड़ी तक आ गई है परन्तु शराफत भी कोई हद होती है ओर गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है। आशा है तुम कल की पहली किरण के साथ वापस जाने का निर्णय ले लोगे। यह मेरी सहनशीलता की अंतिम सुबह होगो। लेखक जानता है कि अतिथि देवता होते हैं परन्तु देवता और मनुष्य देर तक एक साथ इकट्ठे नहीं रह सकते। देवता तो एक बार दर्शन देकर लौट जाते हैं। तुम कब जाओगे अतिथि?